[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3648

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंगो का समाज पर प्रभाव

डॉ. साधना चौहान सहायक प्राध्यापक
महाराजा भोज शा. स्ना.म.वि. धार
शोधार्थी – श्रीमति वैदेही नामजोशी

प्रकृति और मनुष्य का रिश्ता चिंतन के प्राचीन छोर से वर्तमान तक दर्शन, कला और साहित्यिक विमर्श का केन्द्र रहा है। अतः रंग भी इस से अछूते नहीं है।''सूरज की पहली किरण जब किसी वस्तु पर पड़ती है तब वह वस्तु रंगमय हो जाती है। कोई रंग आपको इस तरह छूता है कि आपकी कल्पना में कई ख्वाब जागने लगते हैं। कभी कोई रंग आपको इस तरह मोहित कर लेता है कि आप उसके साथ लय मिलाते हुए जीवन का छंद जीने लगते हैं। और कभी कोई रंग आपकी स्मृति में ठहर आपको प्रफुल्लित रखता है।''[1] चित्र मानवीय मन को अभिव्यक्त करने का एक जरिया है। ''मालवा की परिधि में पूर्वोक्त शिलाचित्र भीम बेटका में विविध रुप में प्राप्त होते हैं। गेरु, हिड़मची और मेगेनीच के वहां से प्राप्त टुकड़ों से ज्ञात होता है कि उनसे निर्मित रंगो से वहां चित्र बनाये जाते थे।''[2] एक चित्रकृति अपने में समाहित सौंदर्य को रंगो से परिपूर्ण करती है। चित्रों के संदर्भ में और उनसे प्रकट होने वाली अनुभूति, श्रृंगारिकता, स्मृति, रहस्य और इन सब से निर्मित विन्यास के केन्द्र में रंगो की विपुल सृष्टि का समाहन ही लक्षित होता है। कोई भी चित्रकृति रंगों के अंतर्सम्बन्ध की बुनियाद पर आधारित है।''[3]

समाज में रंग का महत्व एवं उपयुक्तता –

विधाता का इस सृष्टि पर अपार प्रेम हैं इसलिए उन्होंने इस संसार को रंगमयी बनाया है। तीन मुख्य रंग नीला, पीला, और लाल है। मगर इन रंगों से असंख्य रंगों का निर्माण होता है। यह विविध रंगों की छटा हमें मोहित करती है। भित्ति चित्र बनाने की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। शैल गुहाओं में तो ये बनते ही थे। मालवा में उसी पंरपरा के साथ भवनों की भित्तियों पर चित्र बनाये जाते हैं। बिना चित्र का भवन अमांगलिक माना जाता है। इसी मानसिकता से घर घर में चित्र बनने लगे। गोबर से लिपे पुते या चुने से पुते मकानों में किसान तथा मजदूर वर्ग अब भी जहां तहां शुभ अवसरों पर ऐसे चित्र बनवाते रहते हैं। चित्रों की यह पद्धति चित्रावण कहलाती है। इन चित्रों में बहुधा लाल, हरे, पीले, नीले आदि चटख रंगों का उपयोग किया जाता है।भारतीय संस्कृति में रंग का बहुत महत्व है। तो मालवी समाज इससे अछूता कैसे रह सकता है ? किसी भी शुभ कार्य का प्रारंभ कुमकम, आम की हरी पत्तियों, रंगबिरंगे फूल आदि से किया जाता है। सौभाग्य, मांगल्य आदि दृष्टि से इसका महत्व माना जाता है। उत्सव पर निकाली जाने वाली रंगोली विविध रंगों से सजायी जाती है। मालवी समाज में यह मांडणे के रुप में निकाली जाती है। इसके पीछे की भावना यह है कि वह व्यक्ति को आकर्षित कर सके, मोहित कर सके, एवं मंगल कार्य के लिए मन को प्रसन्नचित्त कर सके।मालवी समाज में क्वार महिनें में कृष्ण पक्ष में छोटी–छोटी बालिकाओं द्वारा दीवार पर संजा बनाने की रीत है। इसमें हरे गोबर पर विभिन्न रंगों के पुष्पों की पंखुड़ियों से एवं चमकिले कागज के टुकड़ों से आकृतियों को रंग–बिरंगा बनाया जाता है। रंग सौंदर्य का निर्माण करते हैं। ''मालवी समाज में आज भी तीज–त्यौहार पर पारंपरिक घरों में हाथ के थापे या मिट्टी की रंगीन प्रतिमाओं से घर को सुशोभित करने की प्रथा है। रंगीन फूलों या आम की हरि पत्तियों के बंदनवार लगाये जाते हैं। हाथों को मेहन्दी लगाकर रंगा जाता है। ग्रामीण महिलाऐं अपने शरीर पर विविध आकृतियां गुदवाकर अलंकृत करती है। विवाह पर बहू के प्रथमागमन पर कुमकुम के पांव द्वारा पगल्ये भरे जाते हैं। प्रथम बालक के जन्म होने पर उसके कुमकुम के पगल्ये बनवाये जाते हैं। विविध त्यौहारों पर यथाअवसर भित्ति चित्र, जैसे नागपंचमी पर नाग का चित्र, चैत्र में गणगौर, अश्विन शुक्ल नवमी पर माताजी त्रिशुल, चंद्र सूर्य, तारे, आदि बनाकर वातावरण को मंगलमय बनाया जाता है।''[4]रंग और रंगों के प्रति मानवीय मन का आकर्षण आदिमानव काल से ही है। किसी भी उत्सव या त्यौहार का आनंद रंगों से द्विगुणित हो जाता है। होली पर लगाये जाने वाले लाल, गुलाबी, हरे, बैंगनी गुलाल से मन उत्साहित हो जाता है। यदि रंग ना होते तो होली का आनंद ही नहीं लिया जा सकता। बसंत पंचमी पर सारा वातावरण बसंती हो जाता है। पीली सरसों का खिलना, अमलताश के पीले फूल, गेंदे के बसंती, नारंगी फूल बदलती ऋतु का एहसास कराते हैं।

दशहरा, दिपावली, गोवर्धन पूजा, हरियाली तीज पर रंगबिरंगे माहौल से मन को प्रसन्नता होती है। अपने यहां साल भर जिन–जिन त्यौहारों की योजना अपने पूर्वजों द्वारा की गयी है उसका उद्देश्य मन को आनन्दित एवं निरोगी रखा जा सके। यदि विविध रंग नहीं होते तो त्यौहार क्या निरस नहीं हो जाते ? मानवी मन को उत्साह, प्रेरणा, चेतना देने के लिए रंग आवश्यक है। ''एक रंग दूसरे से हमेशा भिन्न होता है। हर एक रंग का अपना एक अस्तित्व होता है। हर रंग का अपना एक अलग अर्थ होता है। अपनी आँखों को जो रंग दिखाई देता है उस हर एक रंग का प्रभाव समाज में अनेक प्रकार से दृष्टिगोचर

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

होता है। उदाहरणार्थ मनोरुग्ण एवं पागल व्यक्तियों पे रंग का क्या प्रभाव होता है यह देखने के लिये डॉ. अलेक्झांडर स्काऊस ने संशोधन किया था। उनके अनुसार मन को शांत करने के लिये गुलाबी रंग बहुत फायदेमंद है। उनके अनुसार दवाईयों से उपचार करने के बजाय रंगों से उपचार करना कहीं अधिक सस्ता एवं हितकर है। वे यह भी कहते हैं कि नारंगी रंग से मनुष्य की भूख बढ़ती है और काले रंग से मानवी मन में निराशा उत्पन्न होती है।''[5]

निष्कर्ष – इस तरह हम कह सकते हैं कि रंगो का महत्व एवं उसकी उपयुक्तता शब्दों में रखना या सीमाबद्ध करना असंभव है। क्योंकि समाज में मन और रंगो का नाता ही कुछ अलग थलग है। इसलिए आदिकाल से आज की इक्कीसवीं सदी के आधुनिक वैज्ञानिक युग तक मनुष्य रंगों का प्रयोग करता चला आ रहा है। और केवल उपयोग ही नहीं किया अपितु उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में इन रंगों ने ''रंग'' भर दिये। इसलिए रंगों को मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

संदर्भित गंथों की सूचि –

1. समग्र, कला कुंभ : रविंद्र व्यास 2011
2. मालवी संस्कृति और साहित्य : डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित आदिवासी लोककला अकादमी भोपाल 2004, पृष्ठ 361
3. रंग स्पंद, समूह कला यात्रा : राजेश्वर त्रिवेदी
4. मालवी संस्कृति और साहित्य : डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित आदिवासी लोककला अकादमी, भोपाल 2004 पृष्ठ 362
5. दृककला–मूलतत्वे आणि आस्वाद : प्रा. जयप्रकाश जगताप जगताप पब्लिशिंग हाऊस, पूणे पृ.63